B. Ed. 2nd year (20-22)

Paper- C 11 (c)

(Guidance and counselling)

Unit- 1

* निर्देशन के सिद्धांत :- (Principles of Guidance)

निर्देशन के अर्थ को तथा इसके कार्यों को समझने के बाद हमलोग निर्देशन के कुछ सिद्धांतों का वर्णन करेंगे।

→ (1) निर्देशन समस्त छात्रों के लिए (Guidance for all pupils)

→ (2) निर्देशन जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। (Guidance is a life long process)

→ (3) निर्देशन छात्र - विकास के सभी क्षेत्रों से संबंधित होना चाहिए। (Guidance must be concerned with all areas of pupil growth.)

→ (4) निर्देशन आत्म - बोध और आत्म - विकास को विकसित करता है। (Guidance Encourages self-discovery and self Development)

→ (5) निर्देशन छात्र, अभिभावक, अध्यापक, प्रशासक और परामर्शदाता का सहकारी कार्य होना चाहिए (Guidance must be a co-operative enterprise Involving pupil, parent, Teacher, Administrator and counsellor)

(6) निर्देशन को संपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया का एक अंग समझना चाहिए (Guidance must be considered a major part of the Total Education p...

(7) निर्देशन को समाज और व्यक्ति दोनों के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए (Guidance must be Responsible both to the Individual and to society)

(8) निर्देशन कार्यक्रम में अधिकांश व्यक्तियों को सामान्य व्यक्ति मानना चाहिए (considering most Individuals as Average, normal persons)

(9) लचीलापन (Flexibility)

(10) वस्तुनिष्ठता (Objectivity)

1) निर्देशन समस्त छात्रों के लिए (Guidance for all pupil)

यह जरूरी नहीं है कि निर्देशन उन्हीं को दिया जाये जो कुसमायोजित है बल्कि सभी बालकों, व्यक्तियों सामान्य को भी निर्देशन की आवश्यकता होती है। विद्यालयों में कर्मचारियों, शिक्षकों तथा छात्रों को निर्देशित कर विद्यालयी व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाया जाता है। चूंकि हमारा देश लोकतांत्रिक देश है अतः ऐसे देश की शिक्षा प्रणाली में निर्देशन सभी छात्रों तथा सभी व्यक्तियों को प्रदान कर और योग्य बनाया जाता है।

2) निर्देशन जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है (Guidance is Life long Process) :- यह जीवन भर चलती रहती है, किसी भी आयु वर्ग के व्यक्तियों को निर्देशन की आवश्यकता होती रहती है जैसे बचपन से लेकर छात्रजीवन, तथा व्यवसाय चयन से लेकर वृद्धोपरांत

तक निर्देशन या मार्गदर्शन की जरूरत पड़ती है।
उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर छात्र अपने पाठ्यक्रमों या विभिन्न व्यवसायों का चयन कर समाज में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं।
अतः छात्र जीवन या व्यक्तिगत जीवन में निर्देशन की आवश्यकता निरंतर चलती रहती है। जिससे उन्हें समस्या समाधान के लिए सहायता प्रदान करता है।

(3) निर्देशन छात्र-विकास के सभी क्षेत्रों से संबंधित होना चाहिए (Guidance must be concerned with all areas of pupil growth) :-

निर्देशन छात्रों के सर्वांगीण विकास से संबंधित होता है जैसे छात्रों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावात्मक वृद्धि के लिए निर्देशन प्रदान करना।
अतः हम कह सकते हैं कि व्यक्ति या छात्र की समस्याओं पर विचार करते समय निर्देशक को उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का ध्यान देते हुए उसे इस योग्य बनाए ताकि वह स्वयं अपनी समस्याओं का समाधान करें।

(4) निर्देशन आत्मबोध और आत्म-विकास को विकसित करता है (Guidance Encourages Self-discovery and Self-Development) :- उत्तम निर्देशन में आत्म-बोध, आत्म-निर्देशन और स्व-विकास का लक्ष्य रखा जाता है।
अतः निर्देशन छात्र को अपना व्यवहार समझने और सुविधानुसार परिवर्तन लाने में सहायता प्रदान कर उन्हें स्वयं लक्ष्य प्राप्ति में सहायता प्रदान करता है।

(5) निर्देशन छात्र, अभिभावक, अध्यापक, प्रशासक और परामर्शदाता का सहकारी कार्य होना चाहिए (It must be a co-operative enterprise Involving Pupil, Parent, Teacher, Administration and Counsellor)

→ निर्देशन किसी विशिष्ट कर्मचारी का ही कार्य नहीं समझना चाहिए, बल्कि यह छात्र, अभिभावक, अध्यापक, प्रशासक और परामर्शदाता का सामूहिक कार्य भी होता है।

अतः निर्देशन सेवाओं में कुशल संचालक एवं व्यावसायिक नेतृत्व प्रदान करने हेतु परामर्शदाता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

(6) निर्देशन को संपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया का एक अंग समझना चाहिए (Guidance must be considered as a major part of the Total Education process)

→ जिस प्रकार व्यक्ति का जीवन एक इकाई के रूप में होता है उसी प्रकार निर्देशन का संपूर्ण कार्य एक इकाई के समान है।

अतः निर्देशन को केवल शिक्षण-कार्य से ही नहीं जोड़ना चाहिए बल्कि इसका संबंध विद्यालय की पाठ्य-सहगामी क्रियाओं, अनुशासन, उपस्थिति और मूल्यांकन समीक्षा आदि सभी पक्षों पर होना चाहिए। इसलिए शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया में यह एक महत्वपूर्ण अंग भी यह कार्य करता है।

(7) निर्देशन को समाज और व्यक्ति दोनों के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए (Guidance must be Responsible both to the Individual and Society)

→

चूंकि हम जानते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसीलिए शिक्षाविदों ने शिक्षा का एक उद्देश्य छात्र में सामाजिकता की भावना विकसित करना माना है।
अतः निर्देशन को व्यक्ति केंद्रित नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे समाज के प्रति भी उत्तरदायी होना चाहिए। इसप्रकार हम कह सकते हैं कि निर्देशन को नवयुवकों में इस प्रकार विकसित किया जाना चाहिए ताकि उनमें आत्म-निर्भरता का विकास हो जिससे समाज में वो अपना योगदान दे सकें।

(8) निर्देशन कार्यक्रम में अधिकांश व्यक्तियों को सामान्य व्यक्ति मानना चाहिए (Considering most Indivisuals as Average, Normal person) —:

निर्देशन को केवल समस्यात्मक बालकों तक सीमित नहीं रखा जा सकता है बल्कि निर्देशन विभिन्न क्षेत्रों में सभी व्यक्तियों एवं कर्मचारियों को समान रूप से देकर समाज को सुव्यवस्थित रूप दिया जाता है।

(9) लचीलापन (Flexibility) —: निर्देशन व्यक्ति की समस्याओं, आयु तथा परिवेश के अनुसार प्रदान कर, उनमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन के लिए लचीलापन होना चाहिए अर्थात् निर्देशन स्थिर नहीं होना चाहिए।

(10) वस्तुनिष्ठता (Objectivity) —: निर्देशन पक्षपात रहित होना चाहिए। व्यक्ति और उसकी समस्या से संबंधित आँकड़े वस्तुनिष्ठ तरीकों से एकत्र होना चाहिए।

उपरोक्त सिद्धांतों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि निर्देशन भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु प्रत्येक के लिए स्वयं को आत्मनिर्भर बनाकर समाज में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रेरित करता है।

* निर्देशन या मार्गदर्शन के क्षेत्र :-

- शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालय चयन हेतु
- विषय चयन हेतु
- छात्रों के साथ समायोजन हेतु
- पाठ्य - सहगामी क्रियाओं के चयन हेतु
- व्यवसाय के संबंध में चयन हेतु
- विभिन्न व्यवसायिक परिस्थितियों तथा कार्यप्रणाली हेतु।
- व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं को दूर करने हेतु
- व्यवसाय के क्षेत्रों अन्य सहयोगियों के साथ ताल-मेल हेतु

उपरोक्त बिंदुओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि निर्देशन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक एवं विस्तृत है क्योंकि यह सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सांस्कृतिक या व्यक्तिगत, ~~के साथ-साथ~~ स्वास्थ्य इत्यादि क्षेत्रों में ~~प्रदान~~ ~~(क)~~ मार्गदर्शन प्रदान करता है जिससे व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में समस्या समाधान हेतु तैयार होकर अपनी क्षमताओं का उपयोग करता है।